e-Library Science Research Journal
ISSN : 2319-8435
Impact Factor : 2.2030(UIF)
Vol.3 | Issue.3 | Jan. 2015
Available online at www.lsrj.in

कन्हैयालाल सेठिया की कविताओं का भाव एवं कला पक्ष

Rekha Shekhawat

Research Scholar , Singhania University, Jhunjunu (Raj.)

सारांश – कवि के लिए संवेदना की तीव्रता एवं अंतस की पीड़ा ही उसे बेहतर रचनाकार बनाती है। साथ ही सामाजिक जीवन को गति देन के साथ रचनाकार के रचनाकर्म को प्रभावशाली भी बनाती है। चैतन्य आलोक के निर्झर सेठिया जी ने जीवनपर्यन्त सत्य का अन्वेषक बनकर श्रमपूर्वक जीवन जिया है। सेठिया जी के काव्य में श्रीकृष्ण की अनासक्ति, श्रीराम की मर्यादा, बुद्ध की करुणा, ईसा–मसीह का प्यार, महावीर की अनुकंपा, महात्मा गाँधी की विश्वमैत्री, कबीर का सत्य, मीरा का समर्पण, तुलसी की काव्यकला और कालिदास के मेघदूत के सौंदर्य की अनुभूति एक साथ पाठक को होती है।

प्रस्तावना –

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में उसकी शिक्षा, संगति, संस्कार, चिंतन, मान्यताएँ व उसकी जीवन शैली उसके दृष्टिकोण को जागृत व पुष्ट करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सेठिया जी के पारिवारिक व सामाजिक परिवेश ने भी उनमें दार्शनिक दृष्टिकोण जागृत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। सेठिया जी की कविता में 'दर्शन' के दर्शन तो हमें उनकी प्रथम कृति में ही होने लगते हैं जो उनकी बाद की प्रौढ़ कृतियों में अपना गहरा प्रभाव छोड़ता है। उनकी कविताओं में एक गहरी जीवन दृष्टि है जो पाठकों को 'भारतीय चिंतन एवं दर्शन' के दर्शन तो कराती ही हैं; उनको आंतरिक गुणों से समृद्ध भी करती हैं।

कन्हैयालाल सेठिया का काव्य कर्म उनके अंतस की गूढ़तम अनुभूतियों की जय यात्रा है। आपने हिंदी, राजस्थानी, संस्कृत व उर्दू चारों ही भाषाओं में, समान अधिकार के साथ, उच्चतम स्तर का लेखन किया है। आपकी रचनाओं में प्रकृति–प्रेम, राष्ट्र प्रेम, क्रांति, आत्मानुभूति, दार्शनिकता, राष्ट्रप्रेम, आध्यात्मिकता, आत्मबोध, महावीर का दर्शन, गाँधीवाद का समर्थन, रूढ़ियों का विरोध, राजस्थानी भाषा के प्रति प्रेम एवं जीवन मूल्यों का अंकन हुआ है।

सेठिया जी की जीवन दृष्टि अनेकांतिक है इसी से वे किसी एक परिधि में न तो बँधते हैं न बाँधते हैं। वे आकाश से विराट होकर भी वामन से विनीत हैं। संभवतः इसी कारण माँ शारदा ने स्वयं उनकी लेखनी को आशीर्वाद दिया। सेठिया जी का काव्य मन का विलास नहीं हैं, भीतर व बाहर का संतुलन है। शब्दों के प्रति उनका संकोच सद्भावी है। वे बहुत कम शब्दों का प्रयोग करते हैं। जैन दर्शन के अनुसार

शब्द पुद्गल हैं अतः पुद्गल रूपी शब्द के प्रयोग में वे सम्यक् भाव रखते हैं। वे कम से कम शब्दों में गहन से गहन बात आसानी से कह देते हैं वे गिन–चुने शब्दों में दर्शन का सार कह देते हैं।

चेतना / चिन्मय
मन / मृन्मय!'[01] (वामन–विराट)

कविताओं में भाव पक्ष की अभिव्यक्ति

सेठिया जी ने साहित्य अकादमी, नई दिल्ली में पुरस्कार ग्रहण करने के अवसर पर अपने वक्तव्य में सहज ही अपनी भाव पक्ष की अभिव्यक्ति को इंगित करते हुए कहा था कि 'आज जबकि व्यक्ति के भीतर और बाहर का द्वन्द्व अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया है, साहित्यकार पर दोहरी जिम्मेदारी आ गई है। उसे विज्ञान और मनोविज्ञान में, भौतिक और आध्यात्मिक में सामंजस्य स्थापित कर समाज की रचना को अपेक्षित दिशा बोध देना है। युगीन पीढ़ी के जीवन और सृजन में जो अंतर्विरोध है उसका समाधान आत्मानुभूति एवं आत्म संवेदना से निःसृत साहित्य में ही निहित है, ऐसा मेरा मानना है। मनुष्य की अंतश्चेतना में गहरे पैठे बिना संपूर्ण सत्य को अनुभूत करना संभव नहीं है।.....बाहर के वैषम्य का निराकरण मानव को अपने भीतर टटोलना होगा। इन विचारों के संदर्भ में ही पिछले चालीस वर्षों से मैं निरंतर शब्द की यात्रा पर हूँ। मेरी प्रथम कृति 'वनफूल' का प्रकाशन 1940 में हुआ था तब से हिंदी, राजस्थानी और उर्दू की मेरी अनेक प्रकाशित कृतियों के माध्यम से मैं इसी अनुभूत सत्य को अभिव्यक्ति देता रहा हूँ।'[02]

कवितारूपी अभिव्यक्ति गौण है प्रमुख है कवि की अनुभूति। शब्द पथ है जो अनुभूति को अभिव्यक्ति तक ले जाता है अर्थात अनुभूति को अभिव्यक्त करने वाला माध्यम है शब्द। शब्द शिल्पी सेठिया जी केवल कवि ही नहीं चित्रकार भी हैं। अक्षरों की कुछ पंक्तियों में वे एक पूर्ण चित्र उकेर देते हैं। वे शब्दों में पीड़ा के भाव को मूर्त कर देते हैं तो सौंदर्य को सुंदरतम बना देते हैं। उनकी कविता में दर्शन, अध्यात्म, आत्मबोध, सौंदर्य, करुणा, मानवता के अमूल्य मूल्य ऐसे निःसृत होते हैं मानों सरस्वती की वीणा से स्वर निर्झरणी झर रही हो। उनकी कविता में भावों के विविध पक्ष देखने को मिलते हैं ।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं। प्रेम और करुणा के साथ घृणा और बदला लेने की भावना भी मानव मन के भाव हैं। दूसरों से घृणा और बदला लेने की भावना से हिंसा बढ़ती है अतः दूसरों की भूलों को क्षमा कर देने से व्यक्ति की प्रवृत्तियाँ ऊर्ध्वगामी हो उठती हैं वे क्षमा का महत्त्व बताते हैं–

'दण्ड / सत्ता
क्षमा / संत!'[03] (वामन–विराट)

जिस प्रकार मंदिर में प्रतिष्ठित प्रतिमा के चारों ओर भक्त परिक्रमा करता है उसी प्रकार आत्मा अमर है तथा जीव अपने कर्मों के अनुसार एक योनि से दूसरी योनि में भ्रमण करता रहता है। भारतीय दर्शन का यह गहरा तथ्य गिने चुने कुल चार शब्दों में कह देने की क्षमता है केवल सेठिया जी में है क्योंकि उनकी कविताओं में उनका विराट चिंतन ळें

'नभ / भू
मैं / तू!'[04] (मर्म)

सेठिया जी के दर्शन पर भले ही उपनिषद्, वेदान्त, सांख्य व गीता का प्रभाव परिलक्षित होता है पर उन्होंने दर्शन के जटिलतम सिद्धांतों को अपने चिंतन द्वारा पुष्ट कर सुबोध, सरल और कलात्मक रूप में

प्रस्तुत किया है। आपने न तो किसी भी साधना पद्धति या दार्शनिक मत का समर्थन किया न ही खंडन किया बल्कि दर्शन का उदात्त रूप ही सदैव आपको प्रिय रहा है। जगत में चरम विरोधी धाराओं के बीच सत्य को ढूँढने की प्रक्रिया में आपकी दृष्टि ने भेद–अभेद की घोषणा करते हुए द्वैत में अद्वैत की प्रतिष्ठा की है। अनेकानेक बिम्बों और प्रतीकों के माध्यम से सेठिया जी अपनी इस अभेदानुभूति को व्यक्त करते रहे हैं। यह नहीं कि जीवन में द्वैत है ही नहीं पर अंततः सारे द्वैत अपने मूल में अद्वैत को छिपाए हुए है। डॉ. मूलचंद सेठिया के अनुसार–

'जीवन रथ में अनुरक्ति और विरक्ति के दो श्वेत–श्याम अश्व जुते हुए हैं। सत्य स्वप्नों को पालता है। जड़ का जो ग्रहण है वही फल का दान बन जाता है। धरती की जो अनुभूति है वही अंबर की अभिव्यक्ति बन जाती है, सृजन के साथ अर्जन और विसर्जन दोनों लगे हुए हैं और जीवन में श्वासों के ग्रहण और समर्पण का एक अविरत क्रम है। कहाँ तक वाग्विस्तार किया जाय– जीवन के इस अभेद दर्शन में ही सेठिया जी की अनुभूति, कल्पना और चिंतन का त्रिवेणी संगम हुआ है।.....उनके मन में कहीं उस परम पुरुष की कल्पना अवश्य है, जो सारे द्वन्द्वों के बीच रहकर भी निर्द्वन्द्व है और सबके संग रहकर भी परम असंग है। 'प्रणाम' के गीतों में कवि यदा–कदा उस अनादि–अनश्वर के साथ एकात्मकता का अनुभव भी करता है–

'मैं अनादि हूँ मुझे व्यापता
कभी नहीं इति–अथ का संशय
मैं अरूप अनुभूत चिरंतन
पूर्ण मात्र ही मेरा परिचय!'[05] (प्रणाम)

सेठिया जी की राजस्थानी कविता संग्रहों में से प्रथम संग्रह है 'रमणियां रा सोरठा'। इस कृति से ही 'दर्शन' का प्रभाव स्पष्ट दिखने लगता हैं। 'मींझर' की निम्न पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं जो कठपुतल्याँ कविता से है–

'परदै लारै बैठ हिलावै/ज्यूँ ज्यूँ डोर खिलारो
खेलै खेल पूतळौ समझै/ओ सो करतब म्हारो!'[06] (मींझर)

'सबद' की पंक्तियाँ–

'मैमा मोटी सबद री/सबद बिरम है आप
साध सबद मिटसी मिनख/थारा तीन्यूं ताप!' [07] (सबद)

इस प्रकार सेठिया जी ने हिंदी व राजस्थानी दोनों ही भाषाओं में एक असंग दार्शनिक के रूप में सांस्कृतिक बोध की सुदीर्घ यात्रा की है।

कवि सेठिया ने ब्रह्मानंद का आस्वादन कर स्वयं को समेट नहीं लिया है बल्कि स्वयं को सब में विलय किया है। वे तटस्थ हो कर जगत को देखते हैं तब उनके मन में अद्वैत की भावना जागृत होती है जो सब आकार में परिवर्तित हो सके वही निराकार है अतः वे लिखते हैं–

'चिति क्षिति है अद्वैत
द्वैतमय केवल उसका दर्शन
रूप–अरूप नहीं प्रतिद्वंद्वी
बंधा बिम्ब में दर्पण!'[08] (निर्ग्रन्थ)

यह जगत भी तो अस्थिर होकर स्थिर सा दिखता है इसलिए सेठिया जी के निकट द्वैत–अद्वैत, क्षर–अक्षर का कोई भेद नहीं है। क्षर से अक्षर होता काव्य एक सीमा पार कर दर्शन बन जाता है और दर्शन एक सीमा पार कर काव्य बन जाता है इसी कारण महान दार्शनिक ग्रंथ श्रीमद्भगवद्गीता काव्य है तथा महान काव्य गीतांजलि दर्शन है। सेठिया जी की रचनाओं को दर्शन और काव्य की सीमाओं में बाँध कर मूल्यांकन करना न तो संभव है और न ही उचित। उनका काव्य बाह्य कलेवर के स्तर पर काव्य है लेकिन अंतश्चेतना के स्तर पर वह है दर्शन।

उन्होंने **सत्य** उसी को माना जो सर्व सम्मति से मान लिया जाय। किसी शपथ से बँधा सत्य स्वामी नहीं दास है साधारणतया सत्य बोलना ही सत्य का अर्थ समझा जाता है परंतु अन्य धर्मों व मतों के अनुसार जैन मत भी मानता है कि वाणी, विचार व आचार में सत्य का आचरण ही सत्य है सेठिया जी सत्य के साधक हैं। निष्पत्ति, सतवाणी, वामन–विराट, सबद आदि अनेक काव्य संग्रहों में आपने सत्य को उजागर किया है। आपने लिखा कि चेतना द्वारा सत्य का पालन ही सत्य का रूप निर्धारित करता है–

सत्य
दीप्ति अनल की/तृप्ति सलिल की
गति अनिल की/स्थिति भूतल की
शून्य आकाश का/केवल चेतना की
अपेक्षा से!'[09] (निष्पत्ति)

अहिंसा का मन–वचन व कर्म से पालन करना जैन दर्शन का मूलभूत सिद्धांत है कवि मानवता की पीड़ा का निवारण अहिंसा में मानते हैं। उन्होंने साहित्य अकादमी नई दिल्ली से पुरस्कृत किए जाने के समय अपने भाषण में कहा–

'यह मेरी निश्चित मान्यता है कि हिंसा नहीं अनुकंपा ही पीड़ित मानवता को त्राण कर पाने में सक्षम है। कोई भी सामाजिक या राजनीतिक व्यवस्था जिसका आधार केवल जड़त्व का समवितरण मात्र है मानव हृदय की अंजुलि भर अमृतोपम संवेदना को सूखने से बचाने में असमर्थ है। विज्ञान केवल पुद्गल का अनुचर है; चेतना का स्वामी नहीं। चाँद पर पहुँचना सहज है पर एक चींटी की निर्मिति उसके वश की बात नही।.....यांत्रिक सभ्यता 'त्विष को किलिवश की' 'अमृत को विष की दमपूर्ण चुनौती है और मैंने अपने समग्र साहित्य में इस चुनौती का उत्तर चेतना की अंतिम जय में मेरी आस्था को दुहरा कर दिया है।'[10]

सेठिया जी ने अहिंसा को जैन दर्शन का परिपाक ही नहीं संपूर्ण दर्शन माना है। अहिंसा श्रेयस के पथ पर ले जाने वाली भावना है जो अनुकंपा करना सिखाती है। जब तक मानव को इस भावना का बोध न होगा वह अहिंसा का सत्य नहीं समझ सकेगा–

'नहीं खाता
परिवार में/कोई आमिष
इसलिए अगर/तुम निरामिष
बन गई परंपरा/अंधक्रिया,
बोधना होगा/अहिंसा का सत्य
समझोगे तब/अनुकंपा का अर्थ
करना होगा/भावना को धारण
जो है श्रेयस का पथ
नहीं जिसे अंतः बोध
वह लेगा शपथ!'[11] (श्रेयस)

बिना कुछ दिए अथवा बिना अनुमति के किसी की कोई वस्तु लेना ही चौर कर्म कहलाता है। यदि मनुष्य लोभवश या लालचवश किसी की वस्तु बिना कुछ दिए चुरा लेता है तो इसे वह सबसे तो छिपा सकता है परन्तु उसका हृदय अपने चौर कर्म से परिचित होता है। चौर वृत्ति का वर्जन ही अस्तेय कहलाता है। इसका पालन करने के लिए मानव को अपने चंचल मन को साधने की सलाह देते हैं सेठिया जी–

'मत कर क्षण के विमूर्च्छित/स्तंभन का दर्प
बैठा है मन के विवर में/स्खलन का सर्प!'[12] (मर्म)

लोभ, मोह, माया, तृष्णा, काम, क्रोध जैसी सभी प्रकार की वासनाओं का त्याग ही ब्रह्मचर्य है। संसार में किसी भी जड़–चेतन से मन का जुड़ जाना ही वासनाओं का कारण होता है अतः कवि मनुष्य को स्थित प्रज्ञ होने की कला दर्पण से सीखने को कहता है जो किसी भी रूप यौवन से मन नहीं मिलाता। कवि का विचार सत्य है कि जब तक मन में राग अर्थात वासनाओं की चिन्गारी शेष है तब तक वह स्थित प्रज्ञ नहीं हो सकता। जरा सी हवा पाते ही वासनाएँ सिर उठा लेती हैं–

'नहीं बुझेगी/जब तक
राग की/शेष चिन्गारी
व्यक्त/कामनाएँ/शुष्क पुआल!'[13] (निष्पत्ति)

रूप, रस, गंध स्पर्श व स्वाद आदि से जुड़ी सभी प्रकार की विषयासक्तियों का त्याग **अपरिग्रह** कहलाता है। सेठिया जी कहते हैं कि आसक्ति अर्थात परिग्रह ही पाप का मूल है जो निरंतर मानव जीवन में 'संवर' की स्थिति (पुद्गल का आस्रव) बढ़ाता है उसे मोक्ष से दूर ले जाता है अतः अपरिग्रही बनना चाहिए। वे अपरिग्रह को ज्ञान का नवनीत और दर्शन का अमृत मानते हुए अपरिग्रही बनने की सलाह देते है क्योंकि अपरिग्रही ही मुक्ति पा सकता है। सेठिया जी ने स्पष्ट किया है कि अपरिग्रह ईश्वरीय मार्ग है जो चिरंतन से जुड़ा है और मानव को मुक्ति की ओर ले जाता है

'भिन्न/ऐश्वर्य का मार्ग
ईश्वरीय मार्ग से/प्रथम का लक्ष्य
संग्रह/दूसरे का अपरिग्रह
जो चिंता से जुड़ा/वह नश्वर
जो चिरंतन से जुड़ा/वह अक्षर!'[14] (त्रयी)

करुणा को सभी धर्मों ने अपने हृदय में स्थान दिया है। जैन महावीर तो साक्षात् करुणा की मूर्ति माने जाते थे। सेठिया जी करुणा को अंतःकरण की भावना कहते है। आपने प्रणाम में कहा है–

'बने न कोई व्यथा अहिल्या/शापित हो बेचारी
मुक्त खोलने दो करुणा को/मन की गाँठ तुम्हारी
कहीं न जाए कालकूट बन/मधु मकरंद तुम्हारा!'[15] (प्रणाम)

जैन दर्शन सभी प्राणियों को समान समझने के साथ–साथ सुख–दुःख, जीवन–मरण सभी परिस्थिति में **समभावी** रहने की शिक्षा देता है। सेठिया जी सतवाणी में लिखते हैं–

'सुख दुःख करमांलार है/मन निरवाळो राख
रसना स्यूँ गुड़ लूण नै/समभावी बण चाख!'[16] (सतवाणी)

इसी प्रकार सेठिया जी ने जैन सम्मत सभी जीवन मूल्यों को अपनी रचनाओं में विशेष स्थान दिया है। वे पूजा के आडंबर को अनुचित कहते हुए अंतः तप करने की सलाह देते हैं–

'कर/अंतः तप
नहीं डोलेगा/कोई इंद्रासन
प्रतीक मन का/जो आसन इंद्रियों का
बन स्थित प्रज्ञ/होंगे क्षयित
पाप–पुण्य/रहेगा शेष
विमुक्त–चैतन्य/होगा अनुभूत
कैवल्य/निर्ग्रन्थ का
निर्वाण/तथागत का
मोक्ष/गीता का!'[17] (निष्पत्ति)

प्रकृति अपना वैभव सब पर समान रूप से निछावर करती है। वृक्ष अपने सींचने वाले तथा काटने वाले दोनों व्यक्तियों को एक सी छाया प्रदान करता है। वह **सम्यक दृष्टि** रखता है। उसके मन में दोनों के लिए कोई अंतर नहीं रहता बादल सबके लिए एक समान वर्षा करता है चाहे रेत हो या खेत। कवि ने 'सबद' में लिखा है–

'बरसै बादल एक सो/के अड़ाव के खेत
तू थारै सुख न झरै/कठै रेत स्यूँ हेत?'[18] (सबद)

प्रवीण चंद्र छावड़ा के अनुसार– 'सेठिया जी को किसी तर्कयुक्त ढाँचे में नहीं समझा जा सकता। वे विस्तार में नहीं जाते। शब्दों के प्रति उनका संकोच सद्भावी है। जैन दृष्टि में शब्द 'पुद्गल' हैं और पुद्गल के प्रयोग व उपयोग में सम्यक् आचरण आवश्यक है। शब्दों की, उनकी सुघड़ बनावट किसी सजावट की अपेक्षा नहीं करती; इसी से शब्दों के साथ उनका अतिचार नहीं होता। 'मत खखोल, पी और चल' इन पाँच शब्दों में दर्शन का सार कह देने का यह तर्ज केवल सेठिया जी का अपना है।'[19]

सेठिया जी स्वयं को कवि न मान कर चिंतक मानते थे। उनका विचार था कि जो मैंने संपूर्ण अनुभूत किया है उसे पूरी तरह अभिव्यक्त नहीं कर पाया हूँ, जो कह सका हूँ वह केवल अंश रूप में ही कह सका हूँ; यही कवि का ऋषित्व है।

नेमिनारायण जोशी के शब्दों में 'सेठिया जी के लिए अध्यात्म न तो धार्मिकता का कोई रूप है, न मध्यकालीन भक्ति मार्ग का प्रयोग; वह तो दर्शन और विशेषतः उसके एक अंग, मनोविज्ञान, से संबंध रखने वाला शब्द है। आत्मा उनके लिए कोई रहस्यमयी वस्तु नहीं जो मृत्यु के समय शरीर को छोड़ जाती है। वह तो मानवीय अंतश्चेतना का केंद्र बिंदु है, जो अचेतन न होकर स्वचेतन हैं।'[20]

सेठिया जी की प्रणाम, मर्म, अनाम, वामन–विराट, देह–विदेह, आकाश गंगा, निर्ग्रन्थ, त्रयी, दीठ, सबद, धर कूंचा धर मंजळां, सतवाणी और हेमाणी जैसे काव्य संग्रहों में अध्यात्म व आत्मबोध की रचनाएँ संग्रहीत है। वास्तविकता तो यह है कि आध्यात्मिक स्पर्श के बिना काव्य रचना संभव ही नहीं है। सृष्टि की अनेकता की तह में एकता का जो सूत्र है जो समस्त प्राणों का प्राण और समस्त आत्माओं की आत्मा है

उसी अव्यक्त तत्त्व अर्थात परमात्मा की खोज में कवि सेठिया का समग्र व्यक्तित्व उसकी लेखनी में आ समाया है।

संदर्भ

1	वामन–विराट– कन्हैयालाल सेठिया	पृ.–23
2	कवि कन्हैयालाल सेठिया और उनका काव्य–संपा. प्रकाश आतुर	पृ.–212
3	वामन–विराट– कन्हैयालाल सेठिया	पृ.–11
4	मर्म– कन्हैयालाल सेठिया	पृ.–60
5	प्रज्ञा पुरुष (साहित्य समालोचना) सपां.– झूमरमल सेठिया/भानीराम	पृ.–99–100
6	मींझर– कन्हैयालाल सेठिया	पृ.–19
7	सबद–कन्हैयालाल सेठिया	पृ.–41/99
8	(निर्ग्रन्थ)– कन्हैयालाल सेठिया समग्र (हिंदी–2) संपा.– जुगल किशोर जैथलिया	पृ.–42
9	निष्पत्ति	पृ.–67
10	कवि कन्हैयालाल सेठिया और उनका काव्य–संपा. प्रकाश आतुर	पृ.–213
11	(श्रेयस)– कन्हैयालाल सेठिया समग्र (हिंदी–2) संपा.– जुगल किशोर जैथलिया	पृ.–413
12	मर्म– कन्हैयालाल सेठिया	पृ.–71
13	निष्पत्ति– कन्हैयालाल सेठिया	पृ.–66
14	(त्रयी)– कन्हैयालाल सेठिया समग्र (हिंदी–2) संपा.– जुगल किशोर जैथलिया	पृ.–511
15	प्रणाम– कन्हैयालाल सेठिया	पृ.–02
16	सतवाणी– कन्हैयालाल सेठिया	पृ.–8/24
17	निष्पत्ति– कन्हैयालाल सेठिया	पृ.–103
18	सबद– कन्हैयालाल सेठिया	पृ.–29/61
19	प्रज्ञा पुरुष (साहित्य समालोचना) सपां.– झूमरमल सेठिया/भानीराम	पृ.–46
20	वही	पृ.–92